संपादकीय

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा विगत 31 वर्षों से निरंतर प्रकाशित की जा रही वार्षिक हिंदी पत्रिका ''प्रवाहिनी'' का नूतन अंक अपने प्रबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है।

हम सभी जानते हैं कि हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के संवैधानिक उद्देश्यों की पूर्ति तथा शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी दिशा में संस्थान द्वारा हिन्दी पत्रिका का प्रकाशित किया जाना शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए हिन्दी में सृजनात्मक कायों को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हम विगत 31 वर्षों से अपनी इस हिंदी गृह पत्रिका प्रवाहिनी का सफलतापूर्वक सम्पादन कर रहे हैं।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि विगत अंकों की तरह ही यह अंक भी सुधी पाठकों को उपयोगी, महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लगेगा तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार के लिए सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत पत्रिका में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा हिन्दी साहित्य, मनोरंजन एवं तकनीकी विषयों पर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। इसके अतिरिक्त समाज के प्रबुद्ध लेखकवर्ग से भी पत्रिका में प्रकाशन हेतु लेख आमंत्रित किये गए हैं जिन्हें पत्रिका में उपयुक्त स्थान प्रदान किया गया है। हम सभी विद्वत लेखकों का उनकी रचनाओं के लिए हृदय से आभार व्यक्त करते हैं एवं शुभकामनाएं अर्पित करते हैं। हम इस पत्रिका में रचनाओं को सरल एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग के पाठक इससे लाभान्वित हो सकें।

आपके सुझावों एवं बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं का हम हृदय से स्वागत करते हैं जो भविष्य में हमें इस पत्रिका की गुणवत्ता को अधिक श्रेष्ठ बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

(संपादक मंडल)